गौतम डागा ने संभाला राश्ट्रीय अध्यक्ष का पदभार

नैतिकता के साथ हो संगठन का संचालन : आचार्यश्री महाप्रज्ञ

लाडनूं 26 अक्टूबर, 2009।

राश्ट्रसंत आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में अनेक संगठन है। उसमें युवक परिशद का एक बड़ा संगठन है। इस संगठन में 40 हजार युवक जुड़े हैं और मानव उत्थान के कार्यों में अपनी शक्ति का नियोजन कर रहे हैं।

उक्त विचार उन्होंने जैन वि-व भारती स्थित सुधर्मा सभा में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिशद के 43वें राश्ट्रीय अधिवेशन के समापन समारोह को संबोधित करते हुए व्यक्त किये। इस अधिवेशन में सम्पूर्ण दे-ा से 700 युवा भाग ले रहे हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ ने नवनियुक्त राश्ट्रीय अध्यक्ष श्री गौतम डागा एवं उनकी टीम को संबोधन प्रदान कराते हुए कहा कि नई टीम को मिथ्या अभ्यासों से बचना है और सच्चाई के साथ चलना है। जो नैतिकता के साथ संगठन का संचालन करता है वह संगठन पल्लवित होता है। उन्होंने कहा कि मैं शक्ति में वि-वास करता हूं, जो शक्तिहीन होता है वह कुछ नहीं कर सकता। इस बात की आवश्यकता है कि युवा शक्ति का संचय करे और उसका सम्यक उपयोग करे। उन्होंने कहा कि उस ज्ञान का विकास करे जो समस्याओं को सुलझा सके और उस शक्ति को करे जो दूसरों का कल्याण कर सके। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि कल मैंने युवाओं की रैली देखी थी उसमें 16 प्रांतों से सैकड़ों युवाओं को देखकर ऐसा लगा कि परिशद हिन्दुस्तान की एकता का कार्य कर रही है।

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि युवाओं में कुछ होने की इच्छा, जिज्ञासा एवं कुछ करने की मानसिकता होनी चाहिए। तीनों की प्रबलता से लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि युवक शक्ति का प्रतीक होता है। उस शक्ति को पहचान कर उसका उपयोग विकास में करें। युवाचार्यश्री महाश्रमण ने जैन विद्याकार्यशाला के माध्यम से जैन विद्या के प्रसार में गति देने के लिए सरहाना करते हुए जैन वि-व भारती विश्वविद्यालय के साथ जुड़ने पर जोर दिया।

इससे पूर्व निवर्तमान राश्ट्रीय अध्यक्ष श्री मर्यादाकुमार कोठारी ने नवनियुक्त राश्ट्रीय अध्यक्ष गौतम डागा को पद की गोपनीयता एवं संघनिष्ठा की शपथ दिलाते हुए अध्यक्ष पद का कार्यभार संभालाया इस पर ऊर्जा, शक्ति और भक्ति से भरपूर युवा साथियों ने ओम अर्हम हर्श ध्वनी के साथ नवीन अध्यक्ष का स्वागत किया। अध्यक्ष पद ग्रहण करने के पश्चात प्रथम वक्ता में श्री गौतम डागा ने भावी कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि अभातेयुप का अध्यक्ष बनना गौरव का अनुभव कराने के साथ दायित्व बोध भी कराता है। मेरे युवा साथी अगले दो वर्शों में श्रावक कार्यकर्त्ता तैयार करने पर जोर देंगे। उन्होंने -िक्षा के क्षेत्र में विश्वविद्यालय के साथ जुड़कर महत्त्वपूर्ण कार्य करने का संकल्प व्यक्त करते हुए समण संस्औति संकाय के द्वारा आयोजित जैन विद्या परीक्षाएं ज्ञानशाला एवं उपासक श्रेणी पर वि-ेष कार्य करने पर ध्यान

देने की बात कही। उन्होंने अपनी नई कार्यकारीणी टीम का गठन किया। जिसमें महामंत्री श्री रमेश सुतरिया, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री संजय खटेड़, द्वितीय उपाध्यक्ष श्री तुलसीकुमार दुगड़, सहमंत्री प्रथम श्री निले-ा बैद, द्वितीय श्री प्रफुल्ल बेताला, कोषाध्यक्ष श्री सलील लोढा एवं संगठनमंत्री के तौर पर श्री अविना-ा नाहर को पद की गौपनीयता एवं संघनिश्ठा की शपथ दिलाई। उन्होंने इस पर पंचमण्डल, परामर्श मण्डल, कार्यकारिणी सदस्य, क्षेत्रीय प्रभारियों की नियुक्ति भी की।

कार्यक्रम में निवर्तमान अध्यक्ष ने गत द्विवर्शिय कार्यकाल में मिले सभी के सहयोग हेतु आभार एवं भूलों के लिए क्षमायाचना करते हुए आचार्यप्रवर से पूर्ववत औपापूर्ण आशीर्वाद रखने की अर्ज की। उन्होंने कहा कि अध्यक्ष का पद कांटों का ताज है। पूरी युवा टीम के सहयोग ने इसको फूलों का ताज बना दिया।

जैन वि-व भारती वि-वविद्याल की कुलपति डॉ. समणी मंगलप्रज्ञा ने युवाओं को जैन विद्या की तरफ वि-ोश ध्यान देकर अपने अतीत से जुड़े रहने के लिए प्रेरित किया तथा वि-वविद्यालय में जैन विद्या संबंधी पाठयक्रमों की जानकारी दी। जैन वि-व भारती वि-वविद्यालय के दूरस्थ ि-क्षा निदे-ालय के उपनिदे-ाक डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने नियमित ि-क्षा एवं पत्राचार पाठयक्रमों के बारे में जानकारी दी।

इस अवसर पर तेरापंथ युवक परिशद की श्रेश्ठ शाखाओं का चयन किया गया जिनमें सेवा कार्य के लिए अहमदाबाद शाखा, संस्कार निर्माण के लिए विजयनगर बैंगलोर की शाखा तथा संगठन की दृश्टि से जसोल की शाखा को चयनित व सम्मानित किया गया। सर्वश्रेष्ठ शाखा के रूप में चैन्नई का चयन किया गया। श्रेश्ठ कार्यकर्त्ता सम्मान श्री निर्मल जैन मुंबई, श्री संपत उधना, श्री प्रकाश श्रीश्रीमाल बालोतरा, श्री प्रकाश लोढा बैंगलोर, श्री सुशील चौरड़िया विजयनगर, निर्मल कोटेचा गुवाहाटी को प्रदान किया गया।

इस अवसर पर कार्यक्रम के प्रायोजक श्री बिमलजी नाहटा गुवाहाटी, श्री राकेश कठोतिया मुंबई, श्री बिमल रूणवाल जयसिंगपुर, श्री मूलचन्द नाहर बैंगलोर, श्री कन्हैयालाल दुधोड़िया बैंगलोर, मीरादेवी बैद चैन्नई, श्री जयंतीलाल सुयश सुराणा चैन्नई, श्री मदनलाल गौतमचन्द डागा चैन्नई, श्री ललीत माण्डोत व महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार के प्रायोजक श्री नौरतनमल गिड़िया को अध्यक्ष श्री गौतमचन्द डागा व निवर्तमान अध्यक्ष श्री मर्यादाकुमार कोठारी ने प्रायोजकों को प्रतिक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन श्री रमेश सुतरिया ने किया।

फोटो 1 – दायित्व हस्तांतरण

फोटो 4 प्रायोजक श्री बिमलकुमार नाहटा का सम्मान करते तेयुप अध्यक्ष व निवर्तमान अध्यक्ष

श्री कोठारी को युवा गौरव अलंकरण सम्मान

लाडनूं 26 अक्टूबर, 2009।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिशद के 43वें अधिवे-ान के अवसर पर निवर्तमान अध्यक्ष श्री मर्यादा कुमार कोठारी को उनके द्वारा दी गई उल्लेखनीय सेवाओं के लिए उन्हें ''युवा गौरव अलंकरण'' से सम्मानित किया। इस अवसर कार्यक्रम में आए संभागियों ने ओम अर्हम की ध्वनि के साथ स्वागत किया।

राजेश चेतन एवं प्रो. धर्मचन्द को महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार

अमेरिका के वाईट हाउस पर भारत का तिरंगा होगा : राजेश चेतन

फोटो : 2 व 3

लाडनूं 26 अक्टूबर, 2009।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के 43वें राश्ट्रीय अधिवेशन में देश के ख्यातनाम कवि एवं साहित्यकार राजेश चेतन एवं प्रो. धर्मचन्द जैन को संयुक्त रूप से 2009 का महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार प्रदान किया गया। दोनों विभुतियों को पुरस्कार स्वरूप पचास-पचास हजार का चैक प्रशस्ति-पत्र परिषद के निवर्तमान अध्यक्ष श्री मर्यादा कोठारी, नवमनोनीत अध्यक्ष श्री गौतम डागा वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री संजय खटेड़, पुरस्कार प्रायोजक हनुमानमल गिड़िया परिवार के सदस्यों ने भेंट किये। उन्होंने यह पुरस्कार साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने पर दिया गया।

पुरस्कार स्वीऔति भाषण में प्रख्यात हास्य कवि श्री राजेश चेतन ने कहा कि भारत युवकों का देश है और युवक ही बदलाव ला सकते हैं। उन्होंने पुरस्कार को आचार्य महाप्रज्ञ का असीम औपा प्रसाद बताते हुए कहा कि महाप्रज्ञजी का साहित्य जन-जन तक पहुंचाने के युवाओं को पुरूषार्थ करना चाहिए। उन्होंने देश के युवाओं का अमेरिका, रूस आदि देशों में बढते प्रभाव का उल्लेख करते हुए कहा कि दस वर्षों के बाद अमेरिका के वाइट हाउस पर भारत का तिरंगा होगा।

प्रो. धर्मचन्द जैन ने अपनी साहित्य यात्रा पर प्रका-ा डालते हुए आचार्य महाप्रज्ञ को महान गुरु बताया एवं पुरस्कार को गौरवानुभूति परक बताया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने दोनों विभुतियों के चयन को योग्य व्यक्तियों का चयन बताया एवं दोनों के कार्यों की सरहाना की।

प्र“न्द्रऊन आ°त्त इद्र÷“धद् ध्रद्रद्र हत्र्द्रन्द्रद्धह्मन ऽृश

श्द्रऋन्त्ट्रज ूक्ष ’□ऊट्टन्क्षन्ह

धद्धन्द्रखत्र *द्रत्र□हऑद्र ऽद्धृ_ ह्रद्रत्र्द्रप्र*द्रह्रद्रद्रैधद्र ’द्र{द्रक्र□□द्रध ऋन्द्रख□□द्रए क्रत्र“द्र{द्रक्र□□द्रध ऋन्द्र□द्रत्र□द्र ऽद्धृ ह्रद्रप्रस्त्रद्र*क्र त्र्द्धज आ°त्त प्र“ म इद्रन्धध प्रैध हत्र*द्रत्र्द्र□ हइद्र त्र्द्धज प्र“न्द्रऊन आ°त्त इद्र÷“धद्_ ध्रद्रद्र हत्र्द्रन्द्रद्धह्मन ऽृद्र ’द्रक्रद्रद्धआत्त ूद्र ’□ऊट्टन्क्षन ऽृद्रद्ध ख□द्रधऔ ् क्षआद्ध प्रऽृक्रद्र आद्रक्रद्ध÷द्रह

ौन्फृ आद्रत्तऽृद्रन्ध्_ द्धधद्ध ह्मत्रन□ त्र्प्रत्त आक्रजध ऽत्रृत्र्द्रन त्त्द्ध क्षधद्रक्रद्र प्रऽृ ’न्हि हत्र्द्रन्द्रद्धह्मन त्र्द्धज हत्र□द्र त्र्प्रधख□□द्र ’द्र°न ’द्रह्रद्रथन्द्र ऽद्धृ त्र्त्क्रद्रत्र ह्मन्न्ध्हद्र □“ज त्र्त्क्रद्रत्र ह्मन्द्रप्र□ऽृए हृट्टन्ध ऽद्धृ त्र्त्क्रद्रत्र प्रह्मन्द्रजहद्रत्रए ह्मन्प्रन्क्रद्र□द्रद्र ऽद्धृ त्र्त्क्रद्रत्र हत्रप्रत्थए ख{ख्न्द्र ऽृध त्र्त्क्रद्रत्र प्रत्त्हद्रद्रए त्र्त्क्रद्रत्र खý ™ द्रद्रए ÷त्रआन्द्रध इत्रआ ऽृध त्र्त्क्रद्रत्र क्रद्रप्रधए ह्मन्प्रन्क्रद्र‡ द्रद्र ऽृध त्र्त्क्रद्रत्र हृध्धद्र ऽृध त्र्प्रत्त ’द्र°न हृद्र*“ध्_ ध्रद्रद्र ’द्र{द्रक्रü Ÿ द्रध ऋन्द्रखý ™ द्र ऽद्धृ उन्द्रन्द्र खý_ द्रत्त ऽृध आद्रक्रद्ध÷ध्ह ऋन्द्रन्द्रब्þ ऽृध त्र्त्क्रद्रत्र हन्ध्धद्र ऽृद्रद्ध हत्र‡ द्रध्_ ध्रद्रद्र खý_ द्रत्त ऽृध आद्रक्रद्ध÷ध्ह

{द्रधत्रत्र्द्रü ह खý “द्रह ईक्र्ँद्र हृप्रत्र्प्रध ऽद्धृ ’*क्रद्र ह्रद्रद्रजप्रधश्द्रश क्षन्त्र्द्ध{द्र त्त्द्ध क्षधद्रक्रद्र प्रऽृ हइध _ ध्रद्रद्रप्रü क्रद्रद्धज ऽृध ह्रद्रद्रद्धइद्रक्रद्र ~ द्रद्र ’द्रआ प्रत्तऽृद्रश्ध आद्रक्रद्ध÷ध्ह क्रह्मन ह्रद्रद्रद्धइद्रक्रद्र ~ द्रद्र ऽैक्षद्ध ऽद्धृ प्र“प्रइस्त्रद्र त्र्द्र÷द्रर्द्ध हृद्ध ह्मन्द्रद्धधध ह्मत्रनंü न आ°त्त प्र“ह“ इद्रन्धध त्र्द्धज ’द्र{द्रक्रü ऋन्द्रखý ™ द्रए क्रत्र“द्र{द्रक्रü ऋन्द्रŸ द्रत्र‡ द्र ऽद्धृ त्र्ज÷श्खद्रणन ऽद्धृ हृद्र प्र“हृप्रआü ध ह्मन्द्रद्ध÷ध्ह ौन< ह्मन्द्रद्धजत्त्द्ध प्रहक्रद्र‡ द्र हृत्रैद्र ऽद्धृ उन्द्रन्द्र_ ध्रद्रद्रप्रü क्रद्रद्धज ऽृद्र त्र्ज÷श इद्र“त्त्द्र हत्र्द्रन्द्रद्धह्मन ’द्रक्रद्रद्धप्रआध ह्मन्द्रद्ध÷द्रह